Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

अनुवाद

अनुवादक ओमप्रकाश वाल्मीकि
(मैं हिन्दू क्यों नहीं के विशेष संदर्भ में)

अनुरुद्ध सिंह
भारतीय भाषा केन्द्र
जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय नयी दिल्ली

अनुवाद का सामान्य अर्थ है एक भाषा में व्यक्त विचारों और तात्यपर्य को दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करना या रूपांतरित करना। सफल अनुवाद केवल शब्दों और वाक्यों का रूपांतरण नहीं, अनुवादक के मूल विचारों, संवेदना, अनुभूति को आत्मसात् कर उन्हें नए रूप में प्रस्तुत करना है। वह मूल की पुनः सृष्टि होता है।

समय के साथ–साथ अनुवाद लगातार किए जा रहे हैं, और आज तो अनुवाद एक विधा के रूप में अपने को विकसित भी कर चुका है। पहले जहाँ अनुवादक किए जाने का एक प्रमुख आधार किसी रचना की उपलब्धता दूसरी भाषा में संभव करना था, किन्तु आज अनुवाद एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित हो चुकी है। ज्ञान–विज्ञान के विकास के साथ–साथ अनुवाद करना सरल हो गया है। आज हर कोई अनुवाद तो कर रहा है, पर सवाल यह है कि ये अनुवाद क्या सिर्फ कर देने भर के लिए किए जा रहें हैं या फिर ये अपनी सार्थकता बनाए हुए हैं। अनुवाद महज एक क्रिया नहीं, उसके लिए बहुआयामी दृष्टि अपेक्षित है, जिसके अभाव में मूल पाठ की विश्वसनीयता संभव नहीं हो सकेगी।

मौलिक भावों, विचारों एवं चिंतन की अभिव्यक्ति यदि सृजन है तो अन्य भाषा में अनुवाद समानांतर सृजन अथवा पुनर्सृजन है। मूल कृति के सृजन में जो सुख और आनंद निहित रहता है, अनुवाद में भी वही आनंद और सुख प्राप्त होता है। मूल कृति में रचनाकार अपने भाव–जगत को साकार रूप प्रदान करता है तो अनुवादक उस भाव–जगत से तादात्मय स्थापित कर लक्ष्य भाषा में उसी की पृष्ठभूमि में उसकी पुनर्सृष्टि करता है। रचनाकार तो

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

अपनी सृजन–प्रक्रिया में अवलोकन, अनुभव, चिंतन–मनन और सर्जनात्मक अभिव्यक्ति चार चरणों से गुजारता है किंतु अनुवादक तो इन चार चरणों की प्रक्रिया से दुबारा गुजरता है और उसे अन्य भाषा की जमीन में उसी के अनुरुप अभिव्यक्ति भी प्रदान करता है। अतः अनुवाद में भी सृजनशीलता और संवेदनशीलता की नितांत अपेक्षा रहती है, क्योंकि इस असंभव कार्य को अधिक से अधिक संभव बनाने के लिए अनुवादक को कवि कर्म के कठिन दायित्व का निर्वाह करते हुए दोहरा प्रयास करना पड़ता है। यह मूल का रूपांतरण भी होता है और पुनर्नवीकरण भी।

ओमप्रकाश वाल्मीकि का रचना संसार भारतीय सभ्यता, संस्कृति, इतिहास, दर्शन एवं साहित्य की समीक्षा–आलोचना से निर्मित हुआ है। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने साहित्य की विभिन्न विधाओं में रचना–कर्म किया है। इनके यहाँ कविता, कहानी, आलोचना, नाटक, आत्मकथा की निर्मित का उद्भव एक ही है। वह आलोचना के जरिए समाज की जाति व्यवस्था पर गहरी चोट करते हैं तथा तार्किक ढंग से समाज की सच्चाई को अपने लेखन कर्म के माध्यम से लोगों के समक्ष उजागर करते हैं। 'मैं हिन्दु क्यों नहीं' पुस्तक के द्वारा उनके व्यक्तित्व का एक नवीन रूप सामने आता है जो उनका अनुवादक रूप है। कांचा ऐलय्या द्वारा लिखित मूल पुस्तक श्इॅभ्ल ८ ।ड छव्ज । भ्छक्न्श्श का हिन्दी अनुवाद ओमप्रकाश वाल्मीकि ने किया।ओमप्रकाश वाल्मीकि के विचारों को इस पुस्तक ने और भी ज्यादा पुख्ता किया था।वे सवाल जो ओमप्रकाश वाल्मीकि को बेचैन कर रहे उनके तार्किक उत्तर इस पुस्तक में मौजूद थे। कांचा ऐल्य्या ने इस पुस्तक के माध्यम से जो विचार–दर्शन रखा वह दलित आंदोलन का आधार है। जिसे अंबेड़कर–फुले–विचार–दर्शन कहा जाता है। इस दर्शन को लेखक ने सहज, सरल और तर्क–सम्मत तथ्यपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त किया है। आज के वैचारिक, सामजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक जीवन में जो संकीर्णता सांप्रदायिक और ब्राह्मणवादी–सामंती गठजोड़ ने फैलाई है उसने दलित बहुजन को भी दिग्भ्रमित किया

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

है। उसकी अस्मिता, संस्कृति और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को गहरी छानबीन के साथ उजागर करती है। साथ ही दलित–आंदोलन को उसके सही परिप्रेक्ष्य में समझने में भी मदद करती है। भारत की वर्तमान स्थिति पर कांचा ऐलया ने अत्यधिक आक्रोश और व्यंग्यमिश्रित लहजे में अपनी कलम चलाई है।उन्होंने दलित बहुजनों तथा अन्य हिन्दुओं के बीच के सामाजिक आर्थिक व सांस्कृतिक अंतर को बचपन, पारिवारिक जीवन, बाजार व सत्ता–संबंधों,देवी–देवताओं ,मृत्यु तथा हिन्दुत्व के संदर्भ में गहराई से पडताल की है।

प्रत्येक भाषा की अपनी एक सामाजिक–सांस्कृतिक परंपरा और संरचनात्मक व्यवस्था होती है। हर पाठ में ऐसे कई भाषिक अवयव होते हैं जिनका अनुवाद संभव नहीं हो पाता। इसमें कई बार भाषा सम्बंधी कठिनाइयाँ सामने आती है और कई बार सामाजिक–सांस्कृतिक। इसी संदर्भ में कैटफोर्ड ने अनुवाद की सीमाएँ दो प्रकार की बताई हैं– पहली भाषा परक और दूसरी सामाजिक सामाजिक सांस्कृतिक।

किसी भी भाषा का आस्तित्व पहले होता है और बाद में उसके दूसरे आयाम। इस तरह भाषा की संरचना के मुख्य रूप से तीन आयाम होते हैं– ध्वनि, व्याकरण और अर्थ। ध्वनि भाषा का भौतिक पक्ष है, जिसे हम सुन सकते हैं। व्याकरण भाषा का व्यवस्थापक पक्ष होता है। वाक्य और शब्द का स्थान इसी के अंतर्गत है। अर्थ भाषा का मानसिक पक्ष है। ध्वनियों का स्वयं में कोई अर्थ नहीं होता, लेकिन व्याकरण के जरिए ये ध्वनियाँ शब्द और वाक्य को आकार प्राप्त करती है और इसके बाद ही अर्थ को प्राप्त करती है। भाषा के गठन में लिंग, वचन, वाक्य–विन्यास, पद रूपिम आदि का विशिष्ट स्थान होता है। व्याकरण संरचना की दृष्टि से भाषा की सबसे बड़ी इकाई वाक्य मानी जाती है। भाषा की पूरी संरचना में वाक्य की केन्द्रीय भूमिका होती है।

कामता प्रसाद गुरु ने वाक्य को पूर्ण विचार व्यक्त करने वाला शब्द–समूह कहा है। चौम्स्की मानते हैं कि अपने अमूर्त मानसिक रूप में वाक्य एक आदर्श वाक्य होता है, जो एक

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

दृष्टि से पूर्ण और सही होता है। प्रत्येक भाषा की अपनी वाक्य संरचना होती है और आज के वर्तमान दौर में साहित्यकार को विभिन्न भाषाओं की संवेदनाओं से जुड़ना या जोड़ना हो तो उसे अन्य भाषा की संरचना को समझना ही होगा। अनुवादक के लिए तो यह और भी अनिवार्य हो जाता है।

अंग्रेजी वाक्यों का पदक्रम कर्ता–क्रिया कर्म अर्थात ;नइरमबज. अमइत.वइरमबज.द्ध हैं, वही हिंदी में वाक्यों का पदक्रम इस प्रकार है– कर्ता–कर्म–क्रिया ;नइरमबज.वइरमबज.अमतइद्ध`अव कोटि की भाषाओं में पदक्रम अपेक्षाकृत अधिक स्थिर होता है। इसके विपरीत`वअ कोटि की भाषाओं में पदक्रम अधिक लचीला होता है। अँग्रेजी की तुलना में हिन्दी में अन्विति का क्षेत्र व्यापक होता है। अँग्रेजी में अन्विति केवल वचन और पुरुष तक सीमित है लेकिन हिन्दी में अन्विति वचन, पुरुष और लिंग तीनों स्तरों पर मिलती है। हिन्दी में प्रायः कर्त्तृ वाच्य को स्वाभाविक संरचना माना जाता है, जबकि अंग्रेजी मे कर्म वाच्य स्वाभाविक संरचना है। हिन्दी भाषा की अपनी प्रकृति है। यह अंग्रेजी के हर कर्म वाच्य संरचना का सदैव कर्म वाच्य के रूप में ग्रहण नहीं कर पाती।

भाषा की लघुत्तम इकाई ध्वनि है, जो अर्थभेदक भी होती है। अनुवाद के संदर्भ में ध्वनियों का रूपांतरण लेखन दृष्टि से किया जाता है, जिसे लिप्यन्तरण और लिप्यंकन के माध्यम से लिखा जाता है। जिन अंशों का अनुवाद नहीं किया जा सकता, उनको लक्ष्य भाषा की ध्वनियों की प्रकृति के अनुसार अथवा अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त ध्वनि व्यवस्था के माध्यम से लिप्यंतरित एवं लिप्यांकित किया जा सकता है जैसे ।बंकमउल के लिए क्रमशः एकादेमी–अकादमी, एकेडेमी, आदि रूप हो सकते हैं। शुद्व उच्चारण के साथ उत्तम उच्चारण एक और उद्देश्य है। उत्तम उच्चारण वह होता है जिसमें ।बबमदजए मउचींपेए ।दजपबनजपवद आदि नितांत उचित और अनुरूप हो, साथ ही सुनने वाले पर जिसका प्रभाव पड़े।

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018
जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

वाक्य में लिंग, वचन, काल, पुरुष आदि के अनुसार विभिन्न पदों का एक दूसरे से सबंध जुड़ता है। जैसे–छोटा लड़का, छोटी–लड़की, अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी में अन्विति का क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक व्यापक है। हिन्दी में अन्विति कर्ता और क्रिया कर्म और क्रिया संज्ञा और सर्वनाम, विशेषण और विशेष्य मे लिंग, वचन और पुरुष तीनों स्तर पर होती है। जबकि अंग्रेजी में अन्विति कर्ता और क्रिया तथा संज्ञा और सर्वनाम के बीच वचन और पुरुष दो स्तरों पर होती है।

लड़का किताब पढ़ता है– The boy reads a book.

लड़की सेब खाती है– The girl eats an apple.

अतः हिन्दी और अंग्रेजी दो भिन्न भाषाएं हैं जिसकी अपनी दो लिपियाँ हैं– अपनी संस्कृति है। अंग्रेजी भाषा है, जबकि हिन्दी विश्लेषणात्मक भाषा। अनुवाद करते समय एक समस्या शब्द–प्रति शब्द अनुवाद और भावानुवाद के रूप में सामने आती है। अनूदित पाठ मे भी कहीं–कहीं ओम प्रकाश वाल्मीकि ने शब्दानुवाद किया है, जो लक्ष्य भाषा की संरचना के अनुकूल नहीं है–

मूल पाठ– The elder girls were taught, even as they turned there, how to haudle a younger brothre of sister (p.2)

अनुदित पाठ– बड़ी लड़कियाँ जैसे तीन वर्ष की हो जाती, को सिखया जाता कि वे अपने छोट–भाई बहनों को किस प्रकार संभाले। (पृष्ठ सं. 3)

मूल पाठ– ौम इमहपदे ूपजी सपहीजपदह जीम ीमंतजी ंदक समंतदपदह जव ींदकसम पज ;चप्4द्ध

अनूदित पाठ– चूल्हा जलाना और उसे संभालना से इस काम की शुरूआत होती है (पृष्ठ सं–4)

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

मूल पाठ– थ्पतेज वि ंससए ींदकसपदह चंजे जींज ंतम अनसदमतंइसम जव इतमांपदह तमुनपतमे बंतम ंदक बनसजपअंजमक ेापसस ;च.4द्ध

अनूदित पाठ– सबसे पहले बर्तनों को संभालने की, जो टूट जाने के लिए नाजुक होते हैं, सावधानी और परिष्कृत कुशलता की आवश्यकता होती है। (पृष्ठ सं. 4)

अँग्रेजी के लंबे वाक्यों को हिन्दी में अनूदित कर पाना मुश्किल होता है, इसमें सतर्कता बरतने की आवश्यकता होती है लेकिन ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अनूदित पाठ में इसकी अनदेखी कर दी है–

मूल पाठ– प्ज कवमे दवज ेजतपाम ंद ंअमतंहम कंसपज ईीनरंदण् बवदेबपंनेदमे जींज जीमेम हवककमेमत कव दवज ींअम ीनेइंदके ंदक ींदबम दममक जव इम ेचवामद वि कमतवहंजवतपजलण्

अनूदित पाठ– अपनी स्वयं की सामर्थ्य में एक औसत दलित बहुजन के ध्यान में यह नहीं आता कि इन देवियों के पति नहीं है। और इसलिए इनके लिए अनादर युक्त ढंग से बोला जाये।

सर्जनात्मक शब्दावली का प्रयोग

Shared consciousness- मिली–जुली चेतना

Herbal medicine- जुड़ी औषधियाँ

Institutionalized. संस्थानीकृत

Curry- कढ़ी

'Curry' शब्द का अनुवाद कढ़ी किया गया है जबकि हिन्दी में इसके लिए सालन या सब्जी अर्थ होता है। कढ़ी एक अलग व्यंजन है।

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018
जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

Shared Consciousness के लिए मिली जुली चेतना अनुवाद शब्दानुसार अधिक लगता है। इसके लिए सामान्य चेतना अधिक अनुकूल होगा।

संस्कृति अपने–आप में बेहद गूढ़ शब्द है। हर भाषा और हर समाज की अपनी संस्कृति होती है, जो उसे अन्य से पृथक करती है, विशिष्ट बनाती हे। रचना चूँकि किसी समाज की ही स्थिति की अभिव्यक्ति होती है तथा किसी निश्चित भाषा में अभिव्यक्ति की गयी होती है। इस लिहाज से उसमें भी उस भाषा तथा समाज की संस्कृति धड़कती है, जिसकी पड़ताल आवश्यक हो जाती है। कोई भी समाज अपने सांस्कृतिक विकास के लिए दूसरी भाषाओं को महत्त्वपूर्ण रचनाओं के अनुवाद के बिना नहीं रह सकता। कला, साहित्य, स्थानीय, रीति–रिवाज, रहन–सहन, पर्व–त्यौहार, गीत–संगीत जाति आदि सभी संस्कृति के ही अंतर्गत आते हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि का यह अनूदित ग्रंथ आंध्र प्रदेश की पृष्ठभूमि तथा वहाँ को संस्कृति का समावेशिता करता है।

स्रोत भाषा के सामाजिक–सांस्कृतिक आयामों के अंतर्गत उक्त संस्कृति से जुड़े खान–पान, रिश्ते–नाते, वेशभूषा, संबोधन इत्यादि शब्दालियों को लक्ष्य भाषा में अंतरित करना चुनीतीपूर्ण हैं किन्तु मूल पाठ में वर्णित समाज और संस्कृति को अनुवादक ने यथावत रखते हुए उनका लिप्यंतरण किया है। जातिगत, खान–पान संबंधी उन शब्दों की सूची दृष्टव्य है–

जातियों के नाम	
मूल	अनूदित
ज्ञनतउें	कुरुम्मा
ळवससें	गोला
ळवनकें	गौड़ा
ज्ञंचनने	कापू

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

ैंसनें	शाला
बींांसपमे	चवकाली
डंदहंसपमे	मांगली
डंकंपहें	माडिग्गा

देवी देवताओं एवं त्यौहारों के नाम	
मूल	अनूदित
च्वबींउउं	पोचम्मा
च्वसपउमतंउउं	पोलीमेरम्मा
ज्ञंजजंउंप ेउउं	कहामैसम्मा
ज्ञंजंउंतंरअ	काटामारजु
च्वजंतंरअ	पोटाराजु
ठवदंस	बोनाल
बैपददं चंदकनहं	भिन्ना पाडुंगा
च्मककं च्ंदकदहं	पेड्डा पाडुंगा

खान–पान संबंधी शब्द	
मूल	अनूदित
च्संींतंउ	फलाहारम
च्लेंउ	पायसम
कंककववरंदंउ	कढ़ी
चनसपीववतं	डडुजानम

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018
जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

ैंउ	रसम
च्मतनहंददंउ	पेरुगन्नम

अन्य देवियाँ	
मूल	अनूदित
ल्मससंउउं	येलम्मा
डंदांसंउउं	मढ़कालम्मा
डंतमउउं	मारेम्मा
न्चचचंसंउउं	उपालम्मा
ैंदउांा	सामाक्का
ैंतांा	सारक्का
ज्ंससप ईीववकममअप	तल्ली भूदेवी
।कंअप जंससप	अडावी भूदेवी
ळंदहंउउं जंससप	गंगा मा तल्ली
Panni Patta lunoodu	धनी घता लीजुडू
Chaduvv Sandhya lunoodu	चाव्रुवु संदया लीजुडू

तत्सम्–शब्दों का प्रयोग– तत्सम का शाब्दिक अर्थ है उसके समान या ज्यों का त्यों। ये व शब्द हैं, जिन्हें हिन्दी ने मूल रूप में स्वीकार कर लिया है अर्थात प्राचीनकाल से लेकर आज तक जिनके मूल रूपों में कोई परिवर्तन नहीं है। हिंदी के रूप में तत्सम शब्दों को प्रयोग अधिक किया जाता है। इसका मूल कारण यह है कि तमिल, तेलगू, कन्नड़ तथा मलयामन भाषाओं में सस्कृत के तत्सम–शब्दों की अधिकता है फलतः तत्सम प्रवृत्ति के कारण अहिन्दी–भाषी राज्यों में भी हिन्दी सुगम और सुबोध बन जाती है।

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018
जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

तत्सम शब्द– अग्नि, कृषि, क्षेत्र, कृषक, कृपया, पुरुष, वृद्ध, कक्षा, कार्य, पाद, विकृत, पद्धति, जल, निंदा, आहवान, प्रार्थना, नृत्य, धन, भवन, अंत्योष्टि, भक्त, मित्र, रात्रि, लज्जा, शब्द, विवाह, प्रिय, पुत्र, पृथ्वी, यौवन

देशज शब्दों का प्रयोग– ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने अनूदितग्रंथ में देशज शब्द का प्रयोग भी किया है। देशज उन शब्दों को कहा जाता है, जिनकी व्युत्पत्ति अज्ञात है तथा जो हिन्दी के जीवन–काल में लोक–व्यवहार में अज्ञात, सहसा अथवा किसी ध्वनि के अनुकरण के आधार पर निर्मित हो गये हैं।

देशज शब्द– अचानक, अटपटा, आहट, इठलाना, उभंग, ऊटपटांग, ऊलजलूल, कराहना, खद्दर, खुरदरा, खूँटी, खोखला, गिड़गिड़ाना, गिरगिट, गोंद, घमण्ड, घोंसला, चप्पल, चींटी, छलाँग, तितर–बितर, भटकना, सिट्टी–पिट्टी, हक्का–बक्का

तद्भव शब्दों का प्रयोग– तद्भव का अथ है– 'उससे उत्पन्न' हिन्दी की मूल प्रकृति, पालि और अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी में आये हैं। इस लम्बी यात्रा के इन शब्दों की मूल प्रकृति कुछ विकृत हो गयी है किन्तु इनके मूल स्त्रोत संस्कृत से तत्सम–शब्द ही हैं।

अँगरेजी, अरबी, फारसी आदि के तत्सम–शब्दों से निकले हुए शब्द भी तद्भव कहे जाएँगे। हिन्दी के सभी भाषाविदों ने तद्भव शब्दों को ही हिन्दी का वास्तविक तथा सच्चा शब्द माना है।

तद्भव शब्द– पाँव, गाँव, रस्सी, मिष्ठान, मक्खन ब्याह, बेटा, बहन, बढ़ई, बादल, बुरा, बिजली, बिच्छू, पहचान, पतला, पलंग, पड़ोसी पत्थर, पढ़ना, दूल्हा, दुबला तुरन्त, झरना, जूठा, चमड़ा, चूल्हा, चोर, चौहारा, गाँठ, गेहूँ गोबर, घड़ा, घड़ी, घास, घिन, घी, घोड़ा, काँटा, कान काठ, कुआँ, कडुआ, कपूर, ओला, इलापथी, ईख, ईंट, ईधन, आँसू, आँख, आग, अनाज।

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

प्रस्तुत पुस्तक 'मैं हिन्दू क्यों नहीं' हूँ में दलित बहुजन सांस्कृतिक धारा को समझने और उसके जीवन से जुड़ी रोजमर्रा की गतिविधियों को जानने समझने के लिए तथ्यपरक तथा शोधपरक सामग्री को आधार बनाया गया है। आँधप्रदेश की पृष्ठभूमि के साथ ही वहाँ के जीवन के अनेक जीवंत और सामाजिक पहलुओं को तार्किक ढंग से लेखक ने इस पुस्तक में रखा। मूल पाठ के प्रभावशाली भाषा–शिल्प को उसकी भाषा के मुहावरे, प्रवाह तथा अर्थपूर्ण शब्दों को हिन्दी में उतारने में अनुवादक ओमप्रकाश वाल्मीकि काफी हद तक सफल हुए हैं। कुछ स्थानों पर शब्दानुवाद को छोड़ दिया जाए तो समूचा अनुवाद समग्रता में मूल पाठ के समतुल्य है। वाल्मीकि ने मूल पाठ में उल्लिखित तथ्यों, जातिसूचक शब्दों, खान–पान तथा त्यौहारों संबंधी शब्दावलियों में किसी प्रकार की कोई छेड़खानी न करते हुए उन्हें यथावत रखा है। चूँकि मूल पुस्तक कोई कथा–कल्पना या गल्प इत्यादि न हो कर एक धर्म विशेष के दर्शन, संस्कृति और राजनीति का विश्लेषण है, एक सामाजिक आलोचना है जिसमें लेखक ने एक समाज विशेष के सिद्धांतों मान्यताओं को तथ्यों और शोध के माध्यम से पिरोया है उसमें अनुवादक के लिए उन तथ्यों से छेड़खानी करने या उन्हें अनुवादक के लिए उन तथ्यों से छेड़खानी करने या उन्हें बदलने को कोई प्रश्न ही नहीं बनता। अतः मूल पाठ के विषय और समाग्री को देखते हुए अनुवादक ने उसे सफलतापूर्वक लक्ष्य भाषा में अंतरिक किया है।